[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3595

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की रंगमंचीय प्रस्तुति में रंगों का प्रयोग एवं प्रभाव

डॉ0 भावना ग्रोवर दुआ
विभागाध्यक्ष,परफारमिंग आर्ट विभाग, स्वामी विवेकानन्द सुभारती, विश्वविधालय, मेरठ

'रंग' अगर शब्द रूप में देखा जाये तो बहुत छोटा है परन्तु यदि इसे सोचा जाए तो दुनिया की प्रत्येक वस्तु में निहित है। अगर रंग नही है तो हमारी जीवनचर्या का अस्तित्व ही नही है। रंग है तो मानव जीवन का अस्तित्व है। माना जाता है कि सभी रंग मूल रूप से श्वेत रंग से ही बने है और रंगों की संख्या अंगणित है। जो हमारी दैनिक दिनचर्या का महत्वपूर्ण हिस्सा है।'रंग' जिससे किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का आभास होता है। कभी–कभी तो व्यक्ति की छवि ही हमारे मस्तिष्क पर रंग के कारण अंकित हो जाती है। इसी प्रकार हमारे भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की रंगमंचीय प्रस्तुति जिनमें रंगो का प्रयोग बहुत ही खूबसूरती से किया जाता रहा है। रंगमंच पर चाहे वह नर्तक की वेशभूषा के रंग हो अथवा प्रकाश व्यवस्था द्वारा रंगों का समायोजन, रंग ही मिलकर एक प्रस्तुति को पूर्ण करते हैं। अतः रंगमंच प्रस्तुति में रंग अपना एक विशेष महत्व रखते है।

भारत में मुख्य रूप से आठ प्रकार की शास्त्रीय नृत्य शैलीयाँ प्रचलित है। जिनके नाम है–कथक, भरतनाट्यम ओडिसी, कुचिपुड़ि, मणिपुरी, कथकली, मोहिनी अट्टम व वर्तमान में सत्रिय नृत्य को भी शास्त्रीय नृत्य की मान्यता प्राप्त है। सभी शास्त्रीय नृत्य शैलीयों में प्रस्तुति के दो मुख्य प्रकार है। एक तो किसी भी नृत्य की शास्त्रात्मक प्रस्तुति अर्थात नृत्य साहित्य द्वारा ताल व लय के अन्तर्गत मूल व परम्परागत प्रस्तुति अर्थात नृत्य का ताल पक्ष तथा दूसरी, पौराणिक कथाओं, अन्य मध्यकालीन कथाओं और समकालीन कथाओं की अभिनयात्मक प्रस्तुति अथवा नृत्य का अभिनय पक्ष जिसमें देव स्तुतियां, होरी, ठुमरी, दादरा आदि है अर्थात नृत्य का अभिनय पक्ष।

नृत्य की शास्त्रात्मक प्रस्तुति में तो नर्तक की वेशभूषा का रंग पारंपरिक व कुछ शास्त्रीय नृत्यों में नर्तक की स्वेच्छा पर निर्भर करता है। भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैली कत्थक नृत्य की वेशभूषा का रंग भी नर्तक पर ही निर्भर है। ''कथक वेशभूषा दो प्रकार की है मुगलकालीन तथा परम्परागत वेशभूषा। मुगलकालीन वेशभूषा पूरी बांह की लम्बी फ्राक, चूड़ीदार, कोटी टोपी। पुरूष नर्तक चूडीदार, अंगरखा, दुप्पटा टोपी पहनते है। परम्परागत वेशभूषा में लहंगा ब्लाऊज, चुन्नी होती है आभूषणों से युक्त नर्तकी दर्शनीय लगती है।''[1] नर्तक उक्त वेशभूषाओं में रंगों का चुनाव प्रस्तुति के आधार पर करता है। परन्तु अधिकतर मंच प्रस्तुति हेतु गहरे ररंगों का चयन किया जाता है जैसे – नारंगी, लाल, हरा, नीला, जामुनी आदि।

इसी प्रकार भरतनाट्यम नृत्य शैली की रंगमंचीय प्रस्तुति मे खिले व चटख रंगो का समायोजन किया जाता है।''इसमें नर्तकों की वेशभूषा अत्यंत आकर्षक होती है। भरतनाट्यम नृत्य में भी रंगमंच प्रस्तुति हेतु गहरे रंगों का चुनाव किया जाता है। चटख रंगों की सिल्क का बार्डर वाली साडी जो कि नर्तकी लांघकर बांधती है।''[2] नृत्य का खिला स्वरूप, जो मन को आनंदित कर दे इस हेतु चटख रंगों का प्रयोग किया जाता है ताकि नृत्य, पात्र व दर्शक दोनो ही नृत्य द्वारा आल्हादित हो सके। इसी प्रकार कुचिपुड़ि व ओडिसी नृत्य में भी चटख व खिले हुए रंगों की वेशभूषा का प्रयोग किया जाता है। ''भरतनाट्यम के समान ही इस (कुचिपुडि) नृत्य की पोशाक व गहने होते है। नौ गज की जरी की किनारी वाली साड़ी होती है किन्तु इसमें आगे का पंखा नही होता है। पल्लू को चुन्नटदार करके कमर में ऐसे बांधा जाता है कि पल्लू वाला हिस्सा एक तरफ लटक जाता है।''[3] भारत के दक्षिण भाग के शास्त्रीय नृत्यों में उस क्षेत्र का प्रभाव वेशभूषा पर स्पष्ट परिलक्षित होता है। दक्षिण में प्रारंभ से ही चमकीली व चटखदार रंग की साड़ी स्त्रियां पहनती है वही स्वरूप शास्त्रीय नृत्यों में दिखाई देता है। इन नृत्यों में उनकी पोशाक सिल्क कपड़े में गहरे व चटख रंग जैसे – लाल, संतरी जामुनी, हरा, नीला, पीला आदि की होती है जिनका रंगमंच पर प्रयोग बहुत खूबसूरत प्रतीत होता है। नर्तकी को यह वेशभूषा अप्सरा रूप बना देती है जिससे दर्शकों को प्रस्तुति देखते समय स्वर्ग का आनंद प्राप्त होता है।

केरल प्रांत के शास्त्रीय नृत्य कथकलि में तो पात्र में केवल रंगों द्वारा ही भिन्नता दिखाई जाती है। नर्तक के चेहरे पर भिन्न–भिन्न पात्र की प्रवृति के अनुरूप रंग के लेप लगाये जाते है जिससे पात्र के स्वरूप में भिन्नता उत्पन्न हो। ''हर तरह के पात्रों व चरित्रों के लिए अलग–अलग तरह का होना चाहिए, जिसे 'पच्चा' कहते है। दानवों और राक्षसों का मुंह लाल होता है और उसमें भयंकरता लाने के लिए काले रंग का प्रयोग करते है। इसके अतिरिक्त स्त्री पात्रों का मुख सफेद स्वाभाविक रंग का ही होता है किन्तु शूर्पनखा या पूतना जैसी राक्षसियों का मुख राक्षसों के समान रंगों से ही बनाया जाता है। डाकुओं के मुख को काला रंग देते है।''[4] इस प्रकार कथकलि की सम्पूर्ण प्रस्तुति ही रंगो पर निर्भर करती है। कथकलि नृत्य में पौराणिक कथाएं प्रस्तुत की जाती है जिसमें देवता व राक्षस आदि पात्र होते है जिनमें भिन्नता केवल रंगों द्वारा ही की जा सकती है। दर्शक भी

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

पात्र को मुख लेपन के रंगों द्वारा ही पहचानते है। उपरोक्त बताये गये रंग ही पात्र का स्वरूप निश्चित करते है। कहने का तात्पर्य है कि कथकलि नृत्य में वेशभूषा के रंग तो पात्र के अनुसार भिन्न है ही तथा रूप सज्जा भी रंग के द्वारा ही की जाती है तथा यही इस नृत्य शैली की विशेषता है।

भारत की अन्य शास्त्रीय नृत्य शैली मणिपुरी नृत्य की वेशभूषा में तो रंगों का प्रयोग इतना खूबसूरत होता है कि दर्शकों का यह नृत्य प्रस्तुति देखकर स्वर्ग का आनंद प्राप्त होता है। इस शास्त्रीय नृत्य शैली में मुख्य रूप से रास व महारास प्रस्तुत किया जाता है जिसमें कृष्ण, राधा तथा गोपियां मंच पर उपस्थित होती है। ''रासलीला में नर्तकियां राधा व गोपियां एक गोल घुमावदार लहंगा पहनती है। यह लहंगा प्रायः लाल या हरे रंग का होता है। नीचे दफ्ती या बेंत की छड़ियां लगाकर लहंगे को एक दिशा में ही घूमने के लिये सैट कर दिया जाता है। छोटी और कसी हुई चोली भी इसी प्रकार भड़कीले रंगो और गोटे–जरी के काम से चमकती रहती है। कृष्ण की वेशभूषा मोर–मुकुट युक्त पीताम्बर धारी, मुरली वैजयन्ती माला ही दिखाई जाती है।''[5] जैसा कि सर्वविदित है कि राधा के लहंगे का रंग लाल व हरा तथा कृष्ण का धोती पीले रंग की होती है। उसी प्रकार ही इस नृत्य की रंगमंचीय प्रस्तुति में पात्र की पोशाक में इन रंगो का प्रयोग किया गया है तथा सर्वथा ही किया जाता है। अतः इस नृत्य में भी रंग रंगमंचीय प्रस्तुति मे विशेष महत्व रखते है।

केरल प्रान्त के ही दूसरे नृत्य मोहिनी अट्टम की रंगमंचीय प्रस्तुति में केवल श्वेत रंग की पोशाक का वरण किया जाता है।'' इसमें जरी की किनारी वाली सफेद 9 गज की साडी पहनी जाती है। व पल्ले को चुन्नटे डालकर तगड़ी के नीचे चन्द्राकार बांधा जाता है।'' इस शास्त्रीय नृत्य में कथकलि का अभिनय तथा मुद्राए व भरतनाट्यम के अंग संचालन का सुदर समन्वय है। भगवान विष्णु ने जब अमृत मंथन के समय मोहिनी रूप धारण किया था तथा अपने नृत्य से दैत्यों व देवताओं को अभिभूत किया, यही इस नृत्य शैली का प्रमुख प्रसंग है। मोहिनी रूप दिखाने के लिए इस नृत्य मे श्वेत रंग की जरी बार्डर की साड़ी पहनी जाती है तथा इस रंग के कारण ही इस नृत्य की पहचान प्रतिष्ठित है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की दूसरे प्रकार की प्रस्तुति कथानक प्रस्तुति है जो आजकल सभी शास्त्रीय नृत्यों में प्रयोग की जा रही है। जिसे भारतीय शास्त्रीय नृत्यों में नृत्य–नाटिका की संज्ञा दी गई है। किसी भी शास्त्रीय शैली के अन्तर्गत किसी एक कथानक को विभिन्न नर्तको द्वारा पात्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए यदि कत्थक नृत्य में नृत्य नाटिका महिषासुर मर्दिनी प्रस्तुत की जा रही है जिसमें दुर्गा देवी, एक युद्ध में राक्षस महिषासुरका वध करती हैं तथा देवताओं को राक्षसों से मुक्ति दिलाती है। इस नृत्य नाटिका में नृत्य संरचना कथा शैली पर आधारित होगी किन्तु पात्र का स्वरूप वेशभूषा के रंग द्वारा ही प्रतिष्ठित होगा। दुर्गा के लिए लाल रंग के वस्त्र, महिषासुर व अन्य राक्षसों हेतु काले व लाल रंगो का प्रयोग व देवताओं हेतु पीला, संतरी, हरा आदि रंगो का प्रयोग। अगर इस पात्रों की पोशाक के रंग बदल दिये जाये तो दर्शकों पर इस प्रस्तुति का प्रभाव ही नही रहेगा साथ ही प्रस्तुति के समय इन्हीं रंगो को प्रयोग प्रकाश व्यवस्था में भी किया जाता है। कहने का तात्पर्य है कि रंगमंचीय प्रस्तुति में रंग अपना एक प्रथक व महत्वपूर्ण स्थान रखते है, जिसका प्रभाव प्रस्तुति की पूर्णता पर पड़ता है।
अतः कहा जा सकता है कि भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की रंगमंचीय प्रस्तुति में रंगो का विशेष महत्व है जो नर्तक पर तो प्रभाव डालता ही है साथ ही दर्शकों को भी आल्हादित कर देता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. *डॉ0 विधि नागर, कथक नर्तक, पृष्ठ सं0–8*
2. *वही0, पृष्ठ सं0 10*
3. *डॉ0 गीता रघुवीर, कत्थक नृत्य शास्त्र, पृष्ठ –35*
4. *डॉ0 पुरू दाधीच, कत्थक नृज्य शिक्षा, भाग–1 पृष्ठ –18*
5. *वही0, पृष्ठ–22*
6. *डॉ0 गीता रघुवीर, कत्थक नृत्य शास्त्र, पृष्ठ–33*